CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

श्रवणबाधित बालकों की सृजनात्मकता का एक अध्ययन

डॉ.मधु गढ़वाल
प्राचार्या
सम्बल कॉलेज ऑफ एज्युकेशन
नवलगढ़ रोड़, शिवसिंहपुरा, सीकर
Email- madhu4smbl@gmail.com, Mobile-9460435460

First draft received: 15.10.2023, Reviewed: 19.11.2023, Accepted: 20.11.2023, Final proof received: 30.12.2023

सार-संक्षेप

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य सीकर जिले के श्रवणबाधित बालकों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में राजस्थान के सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण कुल **50** *विद्यालयों को लिया गया है जिसमें* **25** *सरकारी एवं* **25** *गैर-सरकारी विद्यालयों के कुल* **400** *विद्यार्थियों का चयन किया गया है। आँकड़ो के सकंलन हेतु अनुसंधानकर्त्री ने अपने शोध में डॉ. बाकर मेहन्दी द्वारा निर्मित सृजनात्मकता परीक्षण का प्रयोग किया है। प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रतिशत, प्रमाणित विचलन, टी परीक्षण सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।*

मुख्य शब्द : *श्रवणबाधित,* सृजनात्मकता *आदि.*

प्रस्तावना

अधिगम की प्रक्रिया में श्रवण शक्ति का महत्वपूर्ण स्थान होता है। श्रवण शक्ति का सम्बन्ध कानों से है । इसी कारण कान को ज्ञानेन्द्रिय कहा जाता है। श्रवण की प्रक्रिया दो स्तरों पर होती है, एक सुनने के स्तर पर और दूसरी मस्तिष्क स्तर पर। कान वह प्रथम क्षेत्र है, जहां होकर ध्वनि, सूचनाओं सहित हीयरिंग नर्व तक पहुचता है। इस श्रवणशिरा द्वारा सूचनाएँ मस्तिष्क के लिए प्रसारित होती है। जो कुछ कानों द्वारा सुना गया है, उसका विवेचन मस्तिष्क द्वारा होता है। श्रवण द्वारा ही किसी वस्तु की रूपरेखा निर्धारित होकर मस्तिष्क के स्मृति पटल पर अंकित कर दी जाती है। पुनः सुनाई देने पर वह स्मृति पटल पर उभरकर आ जाती है।

किसी भी देश की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और सामाजिक प्रगति उसके नागरिकों के सृजनात्मक विकास पर निर्भर करती है। सृजनशील स्त्री पुरूष भिन्न-भिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिस्थितियों में उत्पन्न होते हैं। अर्थात अनोखापन को सभी वैज्ञानिक सृजनात्मकता का अनिवार्य लक्षण नहीं मानते। सृजनात्मकता से अभिप्राय मौलिक, नए प्रकार के साहचर्य, पुरानी समस्याओं का नवीन समाधान, नमनीयता, भौतिक तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को एक नवीन दृष्टिकोण से देखने से है। सृजनात्मक व्यक्ति चाहे वह श्रवणबाधित हो या सामान्य में नवीन समस्या के प्रति जागरूकता होती है। वह परम्परागत समस्याओं के नए हल निकालने में लगा रहता है। जो बालक प्रदत परिस्थिति के आधार पर कुछ आगे की ओर चिन्तन करता है, वह अपने कार्य या कार्यशैली में अपनी सृजनात्मकता दिखाता है। यदि कोई बालक किसी समस्या की व्याख्या पूर्णतः या अंशतः कर लेता है तो निश्चित ही उसमें कुछ सृजनात्मकता होती है जो बच्चे किसी विशेष परिस्थिति या चुनौति का सामना प्रसन्नचित रहते हुए करते है वे अपने विचारों को प्रवाहात्मक गति से प्रकाशित करते हैं उनमें मौलिकता के तत्व होते हैं। ऐसे बच्चे किसी समस्या के विभिन्न पक्षों में संगति या असंगति समझ लेते हैं ऐसे बच्चे तर्क करने में भी समर्थ होते हैं। सृजनात्मकता की योग्यता वाले बच्चे अपने विचारों से दूसरों को सरलता से प्रभावित कर लेते है ऐसे बच्चे वाकपटुता भी दिखलाते हैं और किसी बौद्धिक त्रुटि को तुरन्त पकड़ लेते हैं। किसी विकट परिस्थिति में स्वतन्त्र निर्णय लेने में उन्हें कोई हिचक नहीं होती है किसी आवश्यक तथ्य की जानकारी हेतु वे पर्याप्त जिज्ञासा प्रकट करते हैं। वातावरण के प्रति वे काफी संवेदनशील होते हैं। वे स्वतन्त्रता पसंद करते हैं। वे स्वीकृत मान्यताओं के अन्तर्गत अपनी उन्मुक्तता पर किसी के हस्तक्षेप को पसंद नहीं करते। सृजनात्मकता सभी में पायी जाती है। जरूरत है उसकी पहचान कर उसके विकास हेतु समुचित व्यवस्था की जाए। श्रवणबाधित व्यक्ति एवं सामान्य व्यक्ति सभी में कुछ न कुछ सृजनात्मकता होती है। वर्तमान शताब्दी के मध्य में ही शिक्षा में सृजनात्मकता के महत्व को समझा जाने लगा। सृजनात्मकता के कारण ही आज तकनीकी उन्नति और अत्यधिक उद्योगों का विकास हुआ है। अतः आज यह आवश्यकता महसूस की जा रही है कि ऐसे व्यक्तियों को तैयार किया जाय, जो विषम परिस्थितियों में भी निर्णायक भूमिका अदा करते हुए रचनात्मक रूप से सोचकर अपेक्षित कार्य कर सकें। अतः यह आवश्यक समझा जा रहा है कि बच्चों में सृजनात्मकता का विकास किया जाये, जिससे वे समाज के उपयोगी सदस्य बन सकें।

अध्ययन का महत्व

श्रवणबाधित विद्यार्थियों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्यों को उद्घाटित करने की दृष्टि से तथा समस्याओं के निवारण हेतु समाधान करने में प्रस्तुत अध्ययन का अपना महत्व है जिससे प्रशासन व समाज श्रवणबाधित विद्यार्थियों को नवचेतना व यथार्थ की धरा पर स्थित संसार दे सकेगा।

प्रजातांत्रिक देश में शासन का कर्त्तव्य होता है कि वह सभी वर्ग के लोगों की शिक्षा की व्यवस्था करे। भारतीय संविधान के अन्दर राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में इस बात पर बल दिया जाता है कि राज्य को सामाजिक कल्याण की भावना से अपने कार्य-कलाप करने चाहिए। शासन का प्रमुख कर्त्तव्य है कि वह समाज के सभी वर्गों को प्रगति के समान अवसर प्रदान करें। समाज में कुछ छात्र श्रवणबाधित भी होते हैं। इन छात्रों की दशा शोचनीय होती है। अतः उनकी शिक्षा-दीक्षा पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

अतः उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर ही अनुसंधानकर्त्री ने श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को अपने अध्ययन का आधार बनाया। चूंकि इस क्षेत्र में ऐसा कोई शोधकार्य नहीं हुआ है, इसलिए इस क्षेत्र में शोध करना अनुसंधानकर्त्री ने आवश्यक व महत्वपूर्ण समझा तथा अपने विभिन्न चरों के रूप में सृजनात्मकता को लेकर माध्यमिक स्तर पर

अध्ययनरत श्रवणबाधित विद्यार्थियों के मध्य इन चरों की तुलना करने का प्रयास इस शोधकार्य के माध्यम से किया है।

अध्ययन का औचित्य

किसी भी अनुसंधान या शोधकार्य का औचित्य अवश्य होता है क्योंकि अनुसंधानकर्त्ता द्वारा औचित्य को ध्यान में रखकर ही संबंधित शोधकार्य का चुनाव करता है। इसी प्रकार अनुसंधानकर्त्री ने भी अध्ययन के औचित्य को ध्यान में रखकर ही इस विषय का चुनाव किया है।

आज तक आत्माभिमान, समायोजन एवं सृजनात्मकता से सम्बन्धित प्रमुख शोधकार्यो में :- चतुर्वेदी, अर्चना (1997) ने ''आदिवासी छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि का व्यक्तिशील गुणों से संबंध का अध्ययन'', बिन्दु, सी.एम. (1998) ने ''माध्यमिक स्तर के श्रवणहीन एवं सामान्य छात्रों के आत्मविश्वास तथा सामाजिक व्यक्तिगत समायोजन के अध्ययन'', विश्वकर्मा, विजयप्रताप (2001) ने ''सामान्य एवं दृष्टिबाधित बालक, बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'', पटेल, राकेश कुमार (2002) ''विश्वविद्यालयी एवं समद्ध स्नातक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सृजनात्मकता का अध्ययन'', नबीला एवं कुमारी (2004) ने ''समायोजन एवं अधिगम शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन'', त्रिपाठी, बी.सी.(2007) ने ''बी.एड. महाविद्यालयों के विद्यार्थी अध्यापकों के समायोजन की जांच का अध्ययन'' किया है।

अनुसंधानकर्त्री ने पूर्ववर्ती शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययनों का पुनरावलोकन किया तथा यह पाया कि श्रवणबाधित विद्यार्थियों से सम्बन्धित अनेक चरों पर अलग-अलग शोधकार्य किए गये हैं, लेकिन उनकी सृजनात्मकता को एक साथ लेकर किया गया कोई अध्ययन अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। इसलिए अनुसंधानकर्त्री ने ***''श्रवणबाधित बालकों की सृजनात्मकता का अध्ययन''*** करने का निश्चय किया।

समस्या कथन

श्रवणबाधित बालकों की सृजनात्मकता का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
2. शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन

1. प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र राजस्थान राज्य के सीकर जिले तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के श्रवणबाधित विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण कुल 50 विद्यालयों को लिया गया है जिसमें 25 सरकारी एवं 25 गैर-सरकारी विद्यालयों के कुल 400 विद्यार्थी लिए गए हैं।

शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

सृजनात्मकता परीक्षण

अनुसंधानकर्त्री ने अपने शोध में डॉ. बाकर मेहन्दी द्वारा निर्मित सृजनात्मकता परीक्षण का प्रयोग किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M)] प्रमाणिक विचलन (SD) एवं क्रांतिक अनुपात मान (C.R. Value) की गणना की गयी है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है -

सारणी संख्या - T.1

शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता

वर्ग	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (CR.Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
शहरी विद्यार्थी	200	7.81	2.86	3.05	सार्थक अन्तर है।	सार्थक अन्तर है।
ग्रामीण विद्यार्थी	200	6.61	2.46			

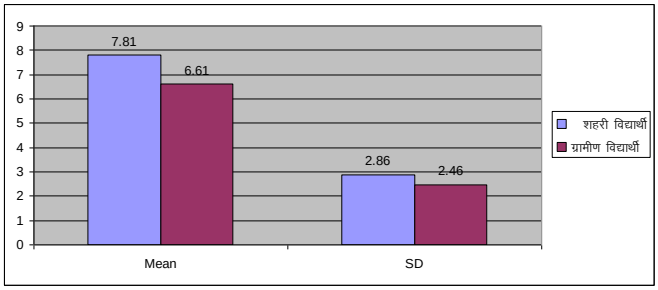

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है। इस आधार पर परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् शहरी एवं ग्रामीण श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या - T.2

शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता

वर्ग	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (CR.Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
सरकारी विद्यार्थी	100	8.06	1.54	1.95	सार्थक अन्तर नहीं है।	सार्थक अन्तर नहीं है।
गैर-सरकारी विद्यार्थी	100	7.26	2.45			

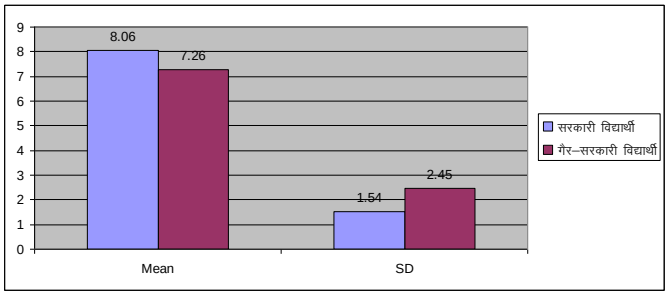

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से कम है। इस आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात् शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या - T.3

ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता

वर्ग	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (CR.Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
सरकारी विद्यार्थी	100	7.56	3.74	2.68	सार्थक अन्तर है।	सार्थक अन्तर है।
गैर-सरकारी विद्यार्थी	100	5.96	2.32			

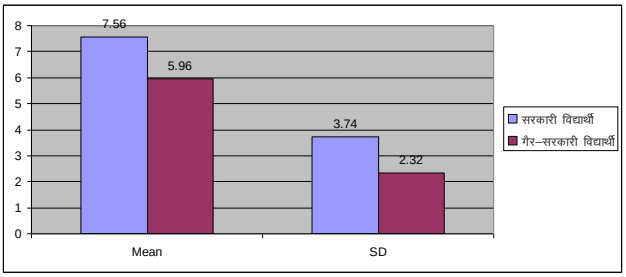

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है। इस आधार पर परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के श्रवणबाधित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है।

शैक्षिक उपयोगिता

1. प्रस्तुत शोध कार्य में श्रवणबाधित विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास करने हेतु अभिप्रेरित करने का प्रयास किया गया है।
2. अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर श्रवणबाधित विद्यार्थियों में संरचनात्मक परिवर्तन को एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया जा सकेगा।
3. इस प्रकार के शोध कार्य इस क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य करेंगे। अनुसंधानकर्त्री इस प्रकार की समस्याओं पर भविष्य में निरन्तर कार्य करने की प्रबल इच्छुक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गौड़, अनिता (2005) : बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे राज पाकेट बुक्स नई दिल्ली पृष्ठ संख्या-14
2. चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2005) : पारिवारिक सुख के लिए है। किशोर मन की समझ'' श्रीविजय इन्द्र टाइम्स नई-दिल्ली, अंक-8, पृष्ठ संख्या-25
3. चौबे, सरयू प्रसाद (2005) : शिक्षा मनोविज्ञान इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस, मेरठ पेज न.184
4. चौहान, एस. एस (1996) : सर्वांगीण बाल विकास आर्य बुक डिपो, करोल बाग नई दिल्ली पेज प. 591
5. जायसवाल, सीताराम (1994) : शिक्षा मनोविज्ञान आर्य बुक डिपो मंदिर करोल बाग नई दिल्ली पेज 221
6. ढोढियाल, ए स. पाठक (1990) : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर पृष्ठ संख्या-51
7. राय, एस. के. : तनाव एवं विद्यार्थियों का व्यवहार मनोवैज्ञानिक रिव्यू, अंक-३, नं.-१, १९९६, पृ.सं-५४
8. राय, पी. एन. : अनुसंधान परिचय (१९८१) चतुर्थ संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ संख्या-६३
9. शर्मा, आर. एस. : शिक्षा अनुसंधान, (२००१)आर.लाल बुक डिपो मेरठ पे. १२५
10. शर्मा, वन्दना एवं राजकुमारी : शिक्षा मनोविज्ञान एवं मापन (२००६)राधा प्रकाशन आगरा पृष्ठ संख्या-९२
11. सक्सेना एन. आर. स्वरूप व पाण्डेय के.पी. : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त २००१ आर.लाल बुक डिपो, मेरठ २००१ पृ.सं. ४५
12. सचदेवा एम. के.,शर्मा के. के., बिंदलशिवानी ,साहू,पी.के. : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा (२००१) पृष्ठ-१७८